● सुख–शांति...

कहां हो पूजा घर

पूजा घर में अलग-अलग देवी देवताओं की मूर्तियां और तस्वीरें होती हैं जिनसे सुख शाति की प्रार्थना की जाती है। लेकिन कई बार जाने-अनजाने ऐसी गलतियां हो जाती हैं जिससे घर का पूजा स्थान उन्नति में बाधक बन जाता है और कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ जाता है। लोग अपने शयन कक्ष में ही पूजा स्थान बना लेते हैं जो वास्तु शास्त्र के अनुसार सही नहीं है। शयन कक्ष में पूजा घर नहीं होना चाहिए इससे पारिवारिक जीवन के संबंधों में परेशानी आती है। आजकल घर में मंदिर बनाने का प्रचलन बढ़ गया है। जबकि वास्तु विज्ञान के अनुसार घर में पूजा का स्थान अलग से होना चाहिए लेकिन यह मंदिर नहीं होना चाहिए। वास्तु विज्ञान के अनुसार मकान में आपने पूजा घर बनाकर उनमें देवी-देवताओं को बैठाया है तो यह प्रयास करना चाहिए इनकी पूजा नियमित हो।

स्टडी रूम के ये रखें

जिस तरह से घर पर भगवान का मंदिर होने से पूरे घर का वातावरण सकारात्मक बना रहता है उसी प्रकार से बच्चों के स्टडी रूम में भी वास्तु से जुड़ी कुछ विशेष चीजें का ध्यान रखना चाहिए। ज्ञान और बुद्धि की देवी माता सरस्वती को वीणा सबसे प्रिय होती है। घर पर वीणा रखने पर हमेशा सुख और शांति बनी रहती है। साथ ही में बच्चों में रचनात्मकता बढ़ती है। घर के स्टडी रूम में देवी सरस्वती का वाहन हंस को मूर्ति को जरूर रखना चाहिए। इसे वास्तु में बहुत ही शुभ माना जाता है। हंस की मूर्ति को घर पर रखने से पढ़ाई में एकाग्रता आती है। मोर पंख में नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने में शक्ति होती है। इसे घर पर रखना शुभ माना जाता है। मोर पंख को पूजा घर में रखने के अलावा बच्चों के कमरे में भी रखना चाहिए।

● परंपरा..

हवन से आती है सकारात्मकता

हिंदू धर्म में हवन, यज्ञ का विशेष महत्व माना जाता है। अग्नि के माध्यम से ईश्वर की उपासना करने की प्रक्रिया को हवन या यज्ञ कहते हैं। यह हमारे जीवन में सकारात्मकता लेकर आता है। हवन, यज्ञ के बिना कोई भी पूजा, मंत्र जप पूर्ण नहीं हो सकता। उत्सव, पर्व, तिथियों पर व्रत-उपवास व धार्मिक परंपराओं में निरोगी जीवन व धन की कामना से देवी-देवताओं की प्रसन्नता के लिए यज्ञ-हवन का विधान प्राचीनकाल से प्रचलित हैं। दरअसल व्यावहारिक व वैज्ञानिक नजरिए से भी हवन त्योहार-पर्व विशेष ही नहीं बल्कि हर रोज करना घर-परिवार और आस-पास का वातावरण शुद्ध बनाने वाला होता है। सनातन काल से यज्ञ और हवन की परंपरा चली आ रही है। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए हवन, यज्ञ किया जाता है। स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए भी हवन किया जाता है। हवन में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री सड़ी-गली, घुन लगी हुई या भीगी हुई नहीं होना चाहिए। श्मशान में लगे वृक्षों की समिधा का प्रयोग हवन में नहीं करना चाहिए। पेड़ की जिस डाल पर पक्षियों का घोंसला हो उसे काटकर हवन में प्रयुक्त नहीं करना चाहिए। जंगल और नदी के किनारे लगे वृक्षों की समिधा हवन के लिए श्रेष्ठ कही गई है।

अग्नि में जब औषधीय गुणों वाली लकड़ियां और शुद्ध गाय का घी डालते हैं तो उसका प्रभाव सुख पहुंचाता है। हवन कुंड चौकोर हो। इसकी लंबाई, चौड़ाई और गहराई समान हो। इसे भीतर से तिरछा बनाया जाए। घर में हवन करवाने से अनेकानेक लाभ हैं। सबसे पहले तो सबकुछ दिमाग से कंट्रोल होता है। जैसे ही हम घर में हवन करवाते हैं तो घर वालों के दिमाग में यह बात बैठ जाती है कि अब हमारे घर में हवन हुआ है अब सारी चीजें अच्छी ही होंगी और वो अच्छा करने के लिए प्रयासरत्त रहने लगते हैं जिससे घर में सुख शान्ति आती है। हवन में ऐसी सामग्री इस्तेमाल की जाती है जिससे वातावरण शुद्ध होता है। घर का वायुमंडल शुद्ध तो होता ही है साथ ही कई कीड़े मकोड़े मर जाते हैं और मच्छर वगैरह भी दूर भाग जाते हैं।

कैसा हो शीशा...

आईना कहां लगाना चाहिए और कहां नहीं इस संबंध में विद्वानों और वास्तुशास्त्रियों द्वारा कई महत्वपूर्ण बिंदु बताए गए हैं। वास्तुशास्त्र में दर्पण को उत्प्रेरक बताया गया है, जिसके द्वारा भवन में तरंगित ऊर्जा की सृष्टि सुखद अहसास कराती है।

इसके उचित उपयोग द्वारा हम अनेक लाभजनक उपलब्धियां अर्जित कर सकते हैं। वास्तु में इसके सही इस्तेमाल पर जोर दिया जाता है। क्योंकि सही दिशा में दर्पण लगाकर यदि वास्तुदोष का निवारण किया जा सकता है...

वास्तु शास्त्र के अनुसार दर्पण घर में सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। दर्पण के कुछ ऐसे भी फायदे हैं, जिनसे आप अपने घर में धन, प्रसन्नत्ता तथा खुशियों को कई गुणा बढ़ा सकते हो। दर्पण के द्वारा आप घर में फैली नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकते हो एवं बिना तोड़-फोड़ किए वास्तु दोषों को भी दूर कर सकते हो। आईना कहां लगाना चाहिए और कहां नहीं इस संबंध में विद्वानों और वास्तुशास्त्रियों द्वारा कई महत्वपूर्ण बिंदु बताए गए हैं। वास्तुशास्त्र में दर्पण को उत्प्रेरक बताया गया है, जिसके द्वारा भवन में तरंगित ऊर्जा की सृष्टि सुखद अहसास कराती है। इसके उचित उपयोग द्वारा हम अनेक लाभजनक उपलब्धियां अर्जित कर सकते हैं।

वास्तु में इसके सही इस्तेमाल पर जोर दिया जाता है। क्योंकि सही दिशा में दर्पण लगाकर यदि वास्तुदोष का निवारण किया जा सकता है, तो वहीं इसके गलत दिशा में लगे होने से नकारात्मक ऊर्जा के स्तर में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण स्वास्थ्य एवं धन की हानि हो सकती है।

● **सकारात्मक ऊर्जा का हो प्रवेश :** वास्तु विज्ञान के अनुसार सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह पूर्व से पश्चिम की ओर एवं उत्तर से दक्षिण की ओर रहता है। इसलिए दर्पण को हमेशा पूर्व और उत्तर वाली दीवारों पर इस प्रकार लगाना चाहिए कि देखने वाले का मुख पूर्व या उत्तर में रहे। इन दिशाओं में दर्पण लगाने से जीवन में उन्नति एवं धन लाभ के अवसर बढ़ जाते हैं। पश्चिम या दक्षिण दिशा की दीवारों पर लगे दर्पण, पूर्व और उत्तर से आ रही सकारात्मक ऊर्जाओं को रिफ्लेक्ट कर देते हैं।

● **शयनकक्ष (बेडरूम) में न लगाएं आईना :** शयन कक्ष में दर्पण कभी नहीं लगाएं। ऐसा करने से दाम्पत्य जीवन में विश्वास की कमी आती है। इसके साथ ही पति-पत्नी में आपसी मतभेद भी बढ़ता है एवं पति-पत्नी को कई स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां उठानी पड़ सकती हैं। पति-पत्नी दोनों को दिन भर थकान महसूस होती है,आलस्य बना रहता है। यदि ड्रेसिंग टेबल रखना जरूरी ही हो तो इस तरह रखें कि सोने वालों का प्रतिबिम्ब उसमें दिखाई न दे, या फिर सोने से पहले इसे ढक दें। यह भी ध्यान रहे कि जहां दर्पण लगा हो उसमें नकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने वाली वस्तुओं का प्रतिबिम्ब दिखाई न पड़े।

● **कैसा हो बाथरूम का शीशा :** फेस वॉश करने के बाद अथवा स्नान करने के बाद खुद को देखने के लिए लोग बाथरूम में दर्पण लगाते हैं। वास्तु विज्ञान के अनुसार बाथरूम में दर्पण लगाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि दर्पण दरवाजे के ठीक सामने नहीं हो। दर्पण का काम होता है प्रवर्तन यानि रिफ्लेक्ट करना,जब हम बाथरूम में प्रवेश करते हैं तो हमारे साथ सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा दोनों ही बाथरूम में प्रवेश करती है। और जब हम सोकर उठते है तब नकारात्मक ऊर्जा की मात्रा अधिक होती है, दरवाजे के सामने दर्पण होने से हमारे साथ जो भी ऊर्जा बाथरूम में प्रवेश करती है वह वापस घर में लौट आती है। नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए बाथरूम में दर्पण इस प्रकार से लगाना चाहिए ताकि इसका रिफ्लेक्शन बाथरूम से बाहर की ओर न हो।

● साफ, स्पष्ट एवं वास्तविक छवि दिखाई देने वाला दर्पण ही काम में लें। नुकीला, चटका हुआ या धुंधला दिखाई देने वाला दर्पण अनेक समस्याओं का कारण बन सकता है। दर्पण जितने हल्के और बड़े होंगे उनका प्रभाव उतना ही अच्छा होगा। शुभफलों में वृद्धि के लिए दीवार पर आयताकार, वर्गाकार या अष्टभुजाकार दर्पण लगाने का ही प्रयास करें।

● फेंगशुई..

खुशहाली के लिए...

बाजारों में फेंगशुई से संबंधित अधिकांश वस्तुएं सुगमता से उपलब्ध हो जाती हैं। मछलियों के जोड़े को घर में लटकाना बहुत शुभ माना जाता है। इनके प्रभाव से घर में धन लाभ और नौकरी में प्रमोशन मिलता है। लव बर्ड, मैंडरेन डक जैसे पक्षी प्रेम के प्रतीक हैं, इनकी छोटी मूर्तियों का जोड़ा अपने बेडरूम में रखें। इनसे दांपत्य जीवन खुशहाल रहेगा। घर में खुशहाली रहे, इसके लिए तीन हरे पौधे मिट्टी के बर्तनों में घर के अंदर पूर्व दिशा में रखना चाहिए। ध्यान रहे कि फेंगशुई में बोनसाई और कैक्टस को हानिकारक माना जाता है। क्योंकि, बोनसाई प्रगति में बाधक एवं कैक्टस हानिकारक होता है। इसलिए भूलकर भी इन्हें घर में न रखें। घर के पूर्वोत्तर कोण में तालाब या फव्वारा शुभ होता है। फेंगशुई के अनुसार, इसके पानी का बहाव घर की ओर होना चाहिए न कि बाहर की ओर। घर में झरने, नदी आदि के चित्र उत्तर दिशा में लगाने चाहिए। घर में हिंसक तस्वीर कभी नहीं लगाएं। फेंगशुई के अनुसार, घर के बाहर काला कछुआ, लाल पक्षी, सफेद बाघ या हरा ड्रैगन हो तो घर में नेगेटिव एनर्जी प्रवेश नहीं कर पाती।

● सिढ़ियां...

▶▶ घर की सीढ़ियां परिवार में कमाने वाले की आमदनी पर प्रभाव डालती हैं। सीढ़ियों को कभी भी उत्तर दिशा में न बनाएं। दक्षिण-पश्चिम दिशा में सीढ़ियां बना सकते हैं। मकान में सीढ़ी दक्षिण दिशा में होना शुभ माना जाता है। सीढ़ियों की संख्या हमेशा विषम होनी चाहिए। सीढ़ियां हमेशा दाईं ओर मुड़नी चाहिए। जो लोग ग्राउंड फ्लोर पर रहते हैं और किराएदार को ऊपरी मंजिल पर रखते हैं तो मुख्य द्वार के सामने सीढ़ियों का निर्माण नहीं करना चाहिए। सीढ़ियों के आरंभ और अंत में द्वार बनवाएं।